Original Article
ISSN (Online): 2582-7472

ShodhKosh: Journal of Visual and Performing Arts
International Conference on Emerging Trends in Design and Arts
May 2024 5(1 ICETDA24), 410–414

CONTRIBUTION OF VISUAL ARTS TO THEATRICAL ART

नाट्य कला में दृश्य कला का योगदान

Hira Lal Kumhar [1]

[1] Self Researcher, Rajasthan, Jaipur, India

ABSTRACT

English: Mastery of any art cannot be achieved without complete and continuous application of techniques, therefore, art is also considered as full of knowledge, a kind of emotional knowledge which helps in awakening a particular mental state and provides satisfaction. Just as painting, sculpture, architecture, music and theatre also have their own different mediums which are very essential in performing arts. The art of theatre has been practiced in our country since ancient times which describes real life of a society. Drama is an art which is played in front of the audience that can be seen and heard simultaneously and enjoyed with reality. Visual decoration, to create related environment, is very important that helps the actor in many ways while performing on the stage. The most important function of visual decoration is to provide space for the dramatic action, proper and clear identical space and situation for the theme. As the curtain of the stage raises, the first thing, the audience examines, is the setup of the stage and tries to assume the insight of the play or the theme of the drama. The decorator always tries to ensure and provides with a sense of possible reality according to the content which makes the scene real with people residing in the place rather than the characters of the drama. Some simple objects, elements are also added to the visual decoration which occupy space of the stage to give an impression of the real space and environment. The designer aims to add elements of forms, colours, proportion, expression and tries to underline some internal qualities of the subject matter. The creation of visual decoration should be planned in such a way that it should provide an appropriate location of the theatrical action, full expressions, clear and attractive emotions, practical and integral part of the entire scene, so, while performance the surround stage art could enhance the act of the actor and provides with the suitable environment for the scene. The present paper showcases the usefulness of visual elements in dramatic art.

Hindi: तकनीक के पूर्ण ज्ञान और निरन्तर अभ्यास के बिना कला में कुशलता प्राप्त नही की जा सकती। इसलिए कला को ज्ञान भी माना जाता है। कला के द्वारा भावों या विचारों का सम्प्रेषण किया जाता है अतः कला प्रकार की भाषा अथवा अभिव्यक्ति है। जिस प्रकार भाषा के द्वारा हम अपने विचारों अभिव्यक्ति करते और दूसरों तक पहुँचाते हैं उसी भाँति कलाकृतियों के द्वारा भी सम्प्रेषित करते हैं कला एक प्रकार भावपूर्ण भाषा है, जो किसी विशेष मानसिक स्थिति को जगाने में सहायक होती है। जिस प्रकार मूर्तिकला, चित्रकला, वास्तुकला, संगीत या नाटक कला आदि के अपने-अपने अलग साधन है। जिन्हें 'माध्यम' कहते हैं।1

नाटक कला हमारे देश में अत्त्यंत प्राचीन काल से हैं। नाटक में उदय होती हुई सम्यता की अधिकत्तम अभिव्यक्ति होती है। यह वास्तविक जिदंगी का बयान करता है तथा एक चमत्कारी रूप में पर्याप्त तथ्यों को अल्प बातों से अलग कर के हमारे सामने एक प्रतीक के रूप में दर्शाता है। नाटक ऐसा कला है, जों दर्शकों के सामने किया जाता है और देखा तथा सुना जाता है। इसके द्वारा धर्म, अर्थ और यश प्राप्त किये जा सकते हैं साथ ही भूतकाल वर्तमान और भविष्य काल के कार्यों की कल्पना कर के उनका अनुसरण भी दिखाया जा सकता है।

Keywords: Scene, Scenery, Drama, Audience, Element, Performing Arts, दृश्य, दृश्यसज्जा, नाटक, दर्शक, तत्व, प्रदर्शन कला

Corresponding Author

Hira Lal Kumhar,
hiralalkumhar07@gmail.com

DOI 10.29121/shodhkosh.v5.i1 ICETDA24.2024.1497

Funding: This research received no specific grant from any funding agency in the public, commercial, or not-for-profit sectors.

Copyright: © 2024 The Author(s). This work is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.

With the license CC-BY, authors retain the copyright, allowing anyone to download, reuse, re-print, modify, distribute, and/or copy their contribution. The work must be properly attributed to its author.

OPEN ACCESS

1. प्रस्तावना

तकनीक के पूर्ण ज्ञान और निरन्तर अभ्यास के बिना कला में कुशलता प्राप्त नही की जा सकती। इसलिए कला को ज्ञान भी माना जाता है। कला के द्वारा भावों या विचारों का सम्प्रेषण किया जाता है अत: कला प्रकार की भाषा अथवा अभिव्यक्ति है। जिस प्रकार भाषा के द्वारा हम अपने विचारों अभिव्यक्ति करते और दूसरों तक पहुँचाते हैं उसी भाँति कलाकृतियों के द्वारा भी सम्प्रेषित करते हैं कला एक प्रकार भावपूर्ण भाषा है, जो किसी विशेष मानसिक स्थिति को जगाने में सहायक होती है। जिस प्रकार मूर्तिकला, चित्रकला, वास्तुकला, संगीत या नाटक कला आदि के अपने-अपने अलग साधन है। जिन्हें 'माध्यम' कहते हैं।1

नाटक कला हमारे देश में अत्त्यंत प्राचीन काल से हैं। नाटक में उदय होती हुई सम्यता की अधिकत्तम अभिव्यक्ति होती है। यह वास्तविक जिदंगी का बयान करता है तथा एक चमत्कारी रूप में पर्याप्त तथ्यों को अल्प बातों से अलग कर के हमारे सामने एक प्रतीक के रूप में दर्शाता है। नाटक ऐसा कला है, जों दर्शकों के सामने किया जाता है और देखा तथा सुना जाता है। इसके द्वारा धर्म, अर्थ और यश प्राप्त किये जा सकते हैं साथ ही भूतकाल वर्तमान और भविष्य काल के कार्यो की कल्पना कर के उनका अनुसरण भी दिखाया जा सकता है।2

भारतीय रंगमंच एवं नाट्य कला के विकास में पारसी रंगमंच का महत्त्व समय रहा। आजादी से पूर्व अंग्रेजी सरकार की बंदिशों के बावजूद भारत में राष्ट्रीय भावनाओं से ओत-प्रोत तथा क्रांतिकारी विचाार धारा के नाटक किये जाते थे।

पारसी हिन्दी रंगमंच का यह समय गुलामी के अन्तहीन अंधेरों के मध्य नये सूये के उदित होने का समय था। कलाकारों, श्रोताओं और दर्शकों सभी को स्वतन्त्रता के स्वर्णिम प्रभात की प्रतीक्षा थी।

सर्वप्रथम सन् 1853 में पश्चिमी तकनीकी के आधार पर लखनऊ के केसर बाग में पहला नाटक 'इन्द्रसभा' किया गया। यह मुंशी अमानत द्वारा लिखा गया है। इस नाटक में स्त्रियों की भूमिकाएँ पुरूषों ने की थी, लेकिन नाटक की सफलता प्रस्तुति ने सभी का ध्यान आकृर्षित किया। इसके पश्चात् देश के महानगरों कलकत्ता तथा बम्बई जैसे बड़े नगरों में नाटक कम्पनियां खुली तथा नये-नये नाट्य निर्देशक कलाकार, संगीतकार सामने आये सभी पारसी नाटक कम्पनियाँ अंग्रेजी नामों की तर्ज पर ही थी। इसके पश्चत् धीरे-धीरे इन कम्पनीयों के नामकरण के पीछे भारतीय के बोध के भी आग्रह हुए। पारसी थियेटर के नाटककार नारायण प्रसाद बेताक, आगा हश्र कश्मीरी तथा राधेश्याम कथा वाचक हिन्दी क्षेत्र के ही थे। उन दिनों लोक नाटक मनोरजन व आजीविका धन के साथ जन-जागृति जन आकांक्षा के सबसे बड़े माध्यम थे।3

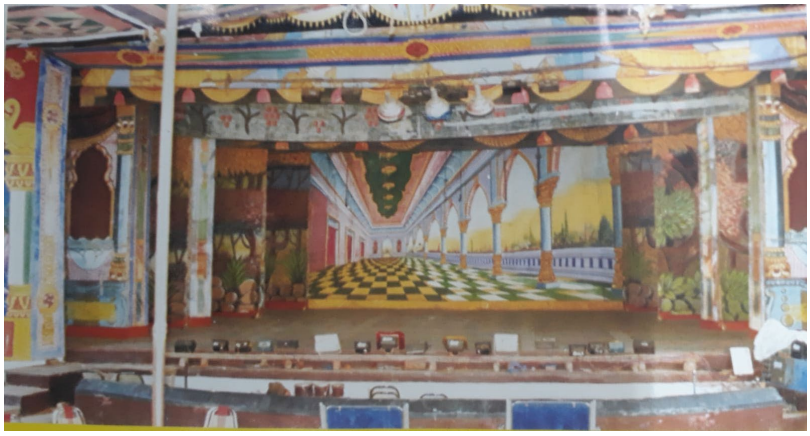

पारसी रंगमंच,, लेखक- निविरोध तारादत्त

भारतीय रंगमंच के इतिहास में पारसी रंगमंच काल अपने चित्रित पर्दों के लिये जाना जाता है। पारसी नाटकों में मुख्य पर्दों के साथ प्रत्येक दृश्य के लिये अलग अलग पर्दे चित्रित किये जाते थे और त्रिआयामी प्रभाव के साथ स्थापत्य फर्नीचर आदि का भी चित्रण किया जाता था। छोटी से छोटी वस्तु चित्रित को भी पर्दों के चित्रण में रंग एवं आकृतियों का प्रयोग कर इन्हें नाटकीय प्रभाव प्रदान किया जाता था। अधिकाशं चटक एवं विरोधाभासी रंगों का प्रयोग किया गया। परम्परागत रंगमंच की प्रस्तुतियों में रामलीला, रासलीला में इसी भाँति पर्दे चित्रिति किये जाते थे तथा कुछ लोक नाट्क रूपों में चित्रित पर्दों का प्रचलन आज भी की देखने को मिलता है।4

दृश्य विन्यास की योजना पर विचार करते समय इस महत्वपूर्ण तत्व को ध्यान में रखना आवश्यक है, कि विन्यास एक उद्देश्यपूर्ण दृश्य सृजन की प्रक्रिया है। एक अच्छा विन्यास किसी वस्तु की सम्पूर्णता की श्रेष्ठ-संभव दृश्य अभिव्यक्ति होती है। चाहे वह कोई संदेश हो या कोई उत्पाद हो, प्रारम्भ काल में भारत में रंगमंच पर दृश्य सज्जा की कोई जरूरत एवं कोई अहमियत नही थी कि दृश्य सज्जा भी नाटक का हिस्सा है। 19वीं सदी में ही पारसी थियेटर की स्थापना हुई। यह विक्टोरियन थियेटर के अनुसार पर ही बना था। उस में भी दृश्य सज्जा की कोई आवश्कता नही थी। कम्पनी में जो पेन्टर

होता था वही पर्दे तैयार करता था। वही पेड़, उद्यान, राजमंहल आदि बनाता और अभिनेता उन पर्दों के सामने अभिन्य करता, क्योकि दृश्य सज्जा कभी भी नाटक की कला का एक अहम हिस्सा नही था, केवल नाटक के प्रदर्शन को आकर्षक बनाने के लिए मंच पर सजावट की जाती थी, जो दर्शकों को चका चैधकर सके, लेकिन नाटक का कभी हिस्सा नही बनता था। यह पर्दे नाटक के कथानक के अनुसार हर दृश्य के लिए मदद नही पहुँचातें थे। उस समय यह किसी ने नही सोचा की दृश्य सज्जा भी उतनी ही महत्वपूर्ण है। जितना कि नाटक कला। दृश्य सज्जा नाटक सजीवता है, उसे नाटक कला से कभी भी अलग नही किया जा सकता। दृश्य सज्जा अभिनेता को अपना अभिनय अदा करने में बहुत सहायक होती है। यह सोच उस वक्त के रंगमंच में पैदा नही हुई थी। केवल मंच पर तालियों के साथ पर्दे उठते थे और गिरते थे। यूरोप में 1918 से पहले यह सोच पैदा हुई कि रंगमंच की सभी कलाओं का इस तरह से कलात्मक मिलन हो जो नाटक कला की आत्मा को एक ऊँचाई पर पहुँच सके। इसी भावना ने दृश्य सज्जा को महत्व दी, और रंगमंच की एक विशेष आवश्यकता हो गई। धीर-धीरे कई विख्यात दृश्य सज्जा कर्ताओं ने अपने-अपने विचारों और कला के माध्यम से रंगमंच को एक कलात्मक रूप दिया और उसके कारण ही रंगमंच को दर्शकों से जोड़ने में बहुत मदद मिली। यह सोच भारत में बहुत लम्बें समय के पश्चात् पहुँची। स्वत्रंता के बाद जब रंगमंच में औपरचारिक प्रशिक्षण की जरूरत महसूस हुई तब दृश्य सज्जा एक विषय की भाँति नेशनल स्कूल ऑफ ड्राम, नई दिल्ली में अध्ययन कराये जाने लगा।5

नाटक कला अनेक सिद्धांतों एवं अभ्यासों का इस सीमा तक संघटित संगठन होता है। जिससे इसके अनेक भिन्न-भिन्न पक्ष यथा नाट्य लेखन, अभिन्य, नृत्य, संगीत, वस्त्र दृश्य विन्यास तथा प्रकाश इत्यादि आपस में एक दूसरे को न केवल संपन्न करते हैं, बल्कि उन्हें सुप्रतिष्ठत भी बनाने का प्रयास करते हैं। रंग मंचीय कला के इन अनेक तत्वों को यदि गहन निर्माण प्रक्रिया, कुशल उपयोग एवं पूवोभ्यास के उपरान्त एकीकृत रूप में प्रस्तुत किया जाये तो ये दर्शकों को उस भावनात्मक एवं बौद्धिक धरातल का अनुभव कराने में सक्षम सिद्ध होते हैं। जिन्हें नाटक लेखन अपने आलेख में मूलरूप से गढ़ता हैं। विन्यास कर्ता कलाकार के रूप में एक अपने सृजन में भावनात्मकला एवं बौद्धिकता इन दोनों तत्वों का समाविष्ट करता है। किसी भी कला सृजन की तार्किकता एवं अनुभव में ये दोनों पक्ष या भावनात्मकता का सृजनकर्ता की व्यक्तिगत मनोभावनाओं एवं मनोवैज्ञानिक अन्त धारा से सबद्ध होता है तथा इसी आधार पर अभिव्यक्त होती है। दूसरी और बोद्धिकता का पक्ष कला सृजन को तार्किक आधार प्रदान करने का प्रयास करता है। कलाकृति की यह तार्किकता दर्शन या उपयोग कर्ता का विचार करने के लिए बाध्य करती है अतः दृश्य सज्जा का अध्ययन उन सहयोगी कलाओं में एक कला का अध्ययन है जो नाट्य क्रिया को विकसित एवं समृद्ध करती है। आमतौर नाट्य गृहों में दृश्य व उपकरणों की सुविधाओं के उपलब्ध आधार पर दृश्य सज्जा की योजना निर्धारित की जाती है। लेकिन दृश्य सज्जा कर्ताओं तथा तकनीकी कर्मकारों के लिये सबसे पहले नाट्य लेख का अध्ययन करना अति आवश्यक होता है। जिससे आधार पर ही प्रस्तुति विशेष के लिए दृश्य सज्जा के स्वरूप को निश्चित किया जाता है कि दर्शकों को यथा सम्भव यथार्थ का आभास हो उन्हें ऐसा प्रतीत होना चाहिए कि इस घर में यथार्थ व्यक्ति रहते हैं।

प्रेक्षागृह का पर्दो खुलने के बाद दर्शक सर्वप्रथम दृश्य सज्जा का ही परिशीलन करता है और इसके द्वारा वह सहज ही अनुमान लगा लेता है कि नाटक के इस भाग का या सम्पूर्ण नाटक का घटना स्थल क्या हो सकता है। दृश्य सज्जा में कुछ साधारण वस्तुओं का भी उपयोग किया जाता है, जो सम्पूर्ण चित्र का स्थल ग्रहण कर उसका आभास करता है। दृश्य सज्जा कर्ता रंगों, आकृतियों और अनुमान में अति रंजना का तत्त्व और विषय वस्तु आंतरिक गुणों को जोड़ने का प्रयास करता है।

दृश्य सज्जा प्रतीकात्मक रूप से नाट्य क्रिया की व्याख्या करने में सक्षम होती है। नाट्य क्रिया के चारों ओर की परिस्थितियों को भी स्पष्ट करती है। सज्जा करता को मंच-सज्जा की योजना इस तरह करनी चाहिए ताकि यह नाट्य क्रिया के स्थालानुकूल हो देखने में आकर्षक, नाट्य प्रस्तुति की आत्मा एवं भाव को अभिव्यक्त कर सके, दर्शकों द्वारा देखी एवं समझी जा सके अभिनेताओं द्वारा निरंतर उपयोग में आ सके, कम खर्चे में सरलता से निर्मित एवं मंच पर लगाई जा सके तथा सम्पूर्ण दृश्य सज्जा का अभिन्न अंग हो।6

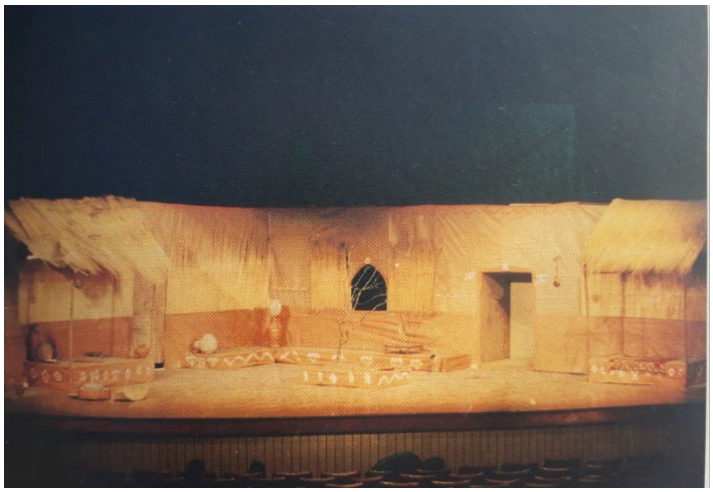

छायाचित्र संख्या 2 - आषाढ़ का एक दिन, रंगमंच का अग्रभाग, मंचसज्जा, नि.धीरज शर्मा

सुविन्यासित दृश्य सज्जा नाट्य क्रिया में कई प्रकार से सहायता प्रदान करती है। यह नाट्य चरित्रों के व्यक्तित्व को प्रतिबिम्बित कर नाट्य क्रिया को घनीभूत करता है। जैसे-एक कमरे का साधारण दृश्य उससे रहने वाले व्यक्तियों की रूचि एवं आदतों को प्रतिबिम्बित कर देता है। विभिन्न चरित्र जिस तरह अपने कमरे को साफ सुथरा या बिखरा हुआ रखते हैं। जिस प्रकार के बर्तन उपकरण एवं वस्तुओं का उपयोग करते हैं। उससे उनके वास्तविक जीवन की झलक और उनके वास्तविक चरित्र का संकेत मिलता है। चरित्रों को इस भाँति रेखांकित करने के अनेक प्रकार हो सकते हैं। 'आषढ़ का एक दिन' छाया चित्र में प्रयुक्त अम्बिका के घर के आँगन में लगा हुआ पेड़ जो केवल ठूंठ बन कर रह जाता है। यह मल्लिका की मनः स्थिति को स्पष्ट रूप सें रेखांकित कर देता है।

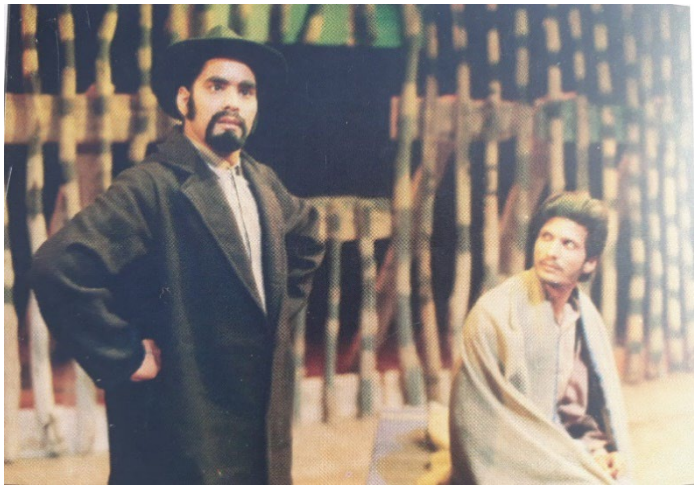

छायाचित्र संख्या 3 - न्यायप्रिय रंगमंच निदेशक-रवि चतुर्वेदी

जयपुर में 1991 में मंचित अल्बेयर कामू द्वारा बल्लियों का कमरा बनाकर एवं उसे काला व मटमैला रंग से रंगित कर आतंकवादियों के मिशन और उनकी निराशा, कुठा एवं कठोरता की व्याख्या करने का प्रयास किय गया है। यही कमरा बाद में जेल की कोठरी के रूप में परिवर्तित हो जाता है। साथ ही पिछली खिड़की से आता प्रकाश बल्लियों (लटों) की लम्बी छाया को कैदियों के ऊपर ओर भारी कर देता है। जो उनकी घोर निराशा को प्रकट करता है।

छायाचित्र संख्या 4 - सलीब, रंगमंच सज्जा, फाईन आर्ठ डिपार्टमैंट, आई.आई.एस.यू, जयपुर

14 सितम्बर 2015 में आई.आई.एस. सभागार जयपुर में आयोजित नाटक 'सलीब' का दृश्य विन्यास में दो समुदायकों का न्याय होता हुआ दर्शाया गया है। इस छाया चित्र में एक न्यायालय का दृश्य में दो अलग-अलग समुदायक है। एक ऊँची जाति के, दूसरे नीची जाति की ओर से बिजूके। दृश्य

सज्जा के मध्य में गाँव के प्रमुख तीन लोग है। जिनका आसन तक्तों से उच्चा बनाया गया है। मंच के मध्य में एक व्यक्ति भी है, जो न्याय की किताब में दोनों और के सवाल जवाबों का लेखन कर रहा है। न्यायालय का दृश्य विन्यास करने के लिए लकड़ी के खड़े स्टेड और मोटे रस्सा का उपयोग किया गया है। ऐसा लगता है कि रस्सों को स्टेडों पर जो लहरदारनुमा बान्धा गया है। वह दोनों ही समाज की मन की स्थिति का दृर्शाता है।

दृश्य सज्जा नाटक का एक अभिन्न अंग है। नाटक में भी सबन्धित वातावरण का उल्लेख किया जाता है, तो नाटक में इसकी आवश्यकता अधिक हो जाती है। दृश्य सज्जा नाट्य कला से पूर्व ही मंचित नाटक के कालखण्ड, समय परिस्थिति से दर्शक को अवगत करा देता है। नाट्क कला में दृश्य सज्जा द्वारा मनोरंजन एवं आजीविका धन के साथ ही जन जागृति में भी सहायक है।

CONFLICT OF INTERESTS

None.

ACKNOWLEDGMENTS

None.

REFERENCES

Aggarwal G.K.: Art Beauty and Review - Shastra, 2010, page 11
Dubey Chandulal: Abhinandan Granth, Drama and Theatre, 1979, page 5
Nivirod Taradutt: Parsi Theater of Rajasthan, 2000, page 2, 3
Lal Lakshminarayan: Modern Hindi Drama and Theatre, 1989, page 60
Chaturvedi Ravi: Scenery, 2010, page 8
Nivirod Taradutt: Parsi Theater of Rajasthan, 2000, page 3, 49
Photo 1: Nivirod Taradutt: Parsi Theater of Rajasthan, 2000, page cover
photo 2: Chaturvedi Ravi, Scenery, 2001, page 21
Photo 3: Chaturvedi Ravi, Scenery, 2001, page 18